विश्व हिंदी समाचार

(विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक प्रकाशन)

वर्ष : 2 अंक : 8 दिसंबर : 2009

मॉरीशस के राष्ट्रपति सर अनिरुद्ध जगन्नाथ डी. लिट् की मानद उपाधि से विभूषित

उपाधि ग्रहण करते हुए महामहिम राष्ट्रपति सर अनिरुद्ध जगन्नाथ।

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र) द्वारा 9 दिसंबर, 2009 को द्वितीय दीक्षांत समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति और हिंदी के विशिष्ट उपन्यासकार श्री विभूति नारायण राय ने मॉरीशस के राष्ट्रपति सर अनिरुद्ध जगन्नाथ को डी. लिट् की मानद उपाधि से विभूषित किया। समारोह की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलाधिपति और हिंदी के प्रख्यात साहित्य समालोचक प्रो. नामवर सिंह ने की। समारोह के दौरान विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों के 31 विद्यार्थियों को स्वर्ण, 42 को रजत और 30 को कांस्य पदक से नवाजा गया। इसके अलावा पीएच.डी., एम.फिल., एम. ए., डिप्लोमा व सर्टिफिकेट पाठ्यक्रमों के 246 विद्यार्थियों को भी डिग्री व प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारकर मॉरीशस के राष्ट्रपति सर अनिरुद्ध जगन्नाथ ने भोजपुरी में दिए अपने ऐतिहासिक भाषण में कहा कि मॉरीशस में रहनेवाले भारतवंशियों के खून में हिंदी रचती बसती है (इहे भाषा हमनी के जीवनी शक्ति देती आ)। चूँकि यह पहला अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय है, इसलिए इसकी जिम्मेदारी भी बड़ी है। इसके लिए विश्वविद्यालय के कुलपति श्री विभूति नारायण राय धन्यवाद के पात्र हैं। हम यहाँ के विद्यार्थियों के उज्वल भविष्य की कामना करते हैं। विश्वविद्यालय में शांति, अहिंसा जैसे पाठ्यक्रम चलाए जाने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि यह पाठ्यक्रम पूरी दुनिया को नई दिशा दे सकेगा क्योंकि आज विश्वभर में हिंसा और आतंकवाद की समस्या विकराल रूप धारण कर चुकी है,ऐसे में अहिंसा अध्ययन का उद्देश्य स्वतः सिद्ध होता है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि यह विश्वविद्यालय पूरी दुनिया में हिंदी के माध्यम से शांति और सद्विचार फैलाएगा और हिंदी की चेतना को विश्वव्यापी बनाएगा।

विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो. नामवर सिंह ने उपाधि धारण करनेवाले छात्रों के बीच मॉरीशस के राष्ट्रपति की उपस्थिति को सुखद और ऐतिहासिक बताया। उन्होंने कहा कि मॉरीशस के राष्ट्रपति की यह उपस्थिति सन् 1975 के 'प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन' की याद को ताजा करती है। सम्मेलन में मॉरीशस के तत्कालीन प्रधानमंत्री एवं राष्ट्रपिता सर शिवसागर रामगुलाम ने अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय का सपना दिखाया था, जो कि 1997 ई. में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के रूप में यहाँ फलीभूत हुआ। उन्होंने विश्वविद्यालय में मॉरीशस के राष्ट्रपति के आगमन पर आभार प्रकट करते हुए विश्वविद्यालय के उज्वल भविष्य की कामना की।

विश्वविद्यालय का प्रगति-पत्र प्रस्तुत करते हुए कुलपति श्री विभूति नारायण राय ने कहा कि विश्वविद्यालय के सभी अध्यापक, छात्र और अन्य कर्मी पूरा प्रयास कर रहे हैं कि वे हिंदी समाज की आकांक्षाओं पर खरे उतर सकें। उन्होंने कहा कि हिंदी को एक अंतरराष्ट्रीय भाषा बनाने के लिए यह भी आवश्यक है कि ज्ञान के विभिन्न अनुशासनों की पाठ्य-सामग्री हिंदी माध्यम से विद्यार्थियों तथा शोधार्थियों को उपलब्ध हो सके। उन्होंने दीक्षांत समारोह में उपाधि अर्जित करनेवाले विद्यार्थियों को बधाई देते हुए स्मरण कराया कि महात्मा गांधी के आदर्शों से जुड़ी इस संस्था की उपाधि उन्हें खास तरह का दायित्व सौंप रही है, इसे प्रत्येक विद्यार्थी को निर्वहन करना चाहिए।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय की वेबसाइट 'हिंदीसमयडॉटकॉम' का लोकार्पण राष्ट्रपति सर अनिरुद्ध जगन्नाथ द्वारा किया गया। दीक्षांत समारोह की शुरुआत में शोभायात्रा ने जहां समा बांधा, वहीं विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत पूज्यबापू के प्रिय भजन 'वैष्णवं जन तो तेने कहिए' से सभा यादगार बन गई।

दीक्षांत समारोह में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष प्रो. थोरात, विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. के.जी.खमरे, भाषा विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. उमाशंकर उपाध्याय, अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. आत्मप्रकाश श्रीवास्तव, संस्कृति विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. मनोज कुमार, साहित्आ विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. सूरज पालीवाल भी मंचस्थ थे।

दीक्षांत समारोह में उपस्थित विद्यार्थीगण।

इस अवसर पर मॉरीशस गणराज्य की प्रथम महिला श्रीमती सरोजनी जगन्नाथ, श्रीमती पद्मा राय, डॉ. विमल थोरात, विश्व हिंदी सचिवालय के उप महासचिव डॉ.राजेंद्र प्रसाद मिश्र, श्रीमती मीना खमरे, डॉ. विभा गुप्ता, प्रो. अनंतराम त्रिपाठी, हेमचंद्र वैद्य, शिवदत्त मिश्र, मूलचंद बड़जाते, वसंत पांडेय, विशेष कर्तव्य अधिकारी श्री राकेश सहित विश्वविद्यालय के विद्यापरिषद के सदस्यगण, शैक्षणिक, गैर- शैक्षणिक कर्मी, उपाधि प्राप्त करनेवाले छात्र/शोधार्थी, अभिभावक व गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।••

हिंदी दिवस समारोह

मॉरीशस और फुंछोलिंग

मॉरीशस

हिंदी दिवस पर पुरस्कार विजेताओं को बधाई देते हुए दाहिने से मुख्य अतिथि श्रीमती इंद्राणी सीबन, श्री सुरेन दयाल एवं महामहिम श्री मधुसूदन गणपति

मॉरीशस में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए भारतीय उच्चायोग, पोर्ट लुई (मॉरीशस) ने 'हिंदी दिवस' 14 सितंबर, 2009 के अवसर पर 'हिंदी संगठन' के सहयोग से 'हिंदी निबंध प्रतियोगिता' का आयोजन किया। मॉरीशस में सेकेंडरी/हायर सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों के लिए आयोजित इस प्रतियोगिता में छात्र - छात्राओं ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया । 'हिंदी निबंध प्रतियोगिता' के प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार प्राप्त विजेताओं को क्रमश: पंद्रह हज़ार, दस हज़ार व आठ हज़ार रुपए के नकद पुरस्कार प्रदान किए गए ।

10 अक्तूबर, 2009 को इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, फेनिक्स के सभागार में आयोजित एक कार्यक्रम में ' हिंदी निबंध प्रतियोगिता ' के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए । मॉरीशस की महिला अधिकार, बाल विकास एवं परिवार कल्याण मंत्री श्रीमती इंद्राणी सीबन कार्यक्रम की मुख्य अतिथि थीं । मॉरीशस की राष्ट्रीय असेम्बली में सरकार के मुख्य सचेतक श्री सुरेन दयाल तथा भारतीय उच्चायुक्त महामहिम मधुसूदन गणपति भी इस अवसर पर उपस्थित थे । इनके अलावा, इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र की निदेशिका श्रीमती अनिता अरोड़ा, विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव डॉ. (श्रीमती) विनोदबाला अरुण, उप महासचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र व कई अन्य गणमान्य व्यक्ति भी कार्यक्रम में उपस्थित थे । इस अवसर पर श्री प्रशांत पीसे, उप उच्चायुक्त ने श्री पी. चिदंबरम, गृह मंत्री, भारत सरकार का तथा सुश्री सुजा.के.मेनन, द्वितीय सचिव ने विदेश सचिव, श्रीमती निरुपमा राव का संदेश उपस्थित श्रोताओं के समक्ष पढ़कर सुनाया ।

अपने भाषणों में वक्ताओं ने हिंदी के महत्व तथा प्रचार-प्रसार की आवश्यकता पर बल दिया । श्रीमती इंद्राणी सीबन ने कहा कि ' हिंदी की मिठास उनको सदैव आकृष्ट करती है । ' श्री सुरेन दयाल ने कहा कि ' मॉरीशस में हिंदी का प्रचार-प्रसार निरंतर बढ़ रहा है और हिंदी सिनेमा इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है । ' भारतीय उच्चायुक्त महोदय ने कहा कि ' हिंदी भारत और भारतीयता की पहचान है । संपूर्ण विश्व में जहाँ भी भारतीय अथवा भारतीय मूल के लोग रहते हैं, वे हिंदी भाषा के माध्यम से भारतीयता के मूल्यों का संरक्षण और प्रचार-प्रसार कर रहे हैं ।

हिंदी संगठन, हिंदी प्रचारिणी सभा, हिंदी लेखक संघ, हिंदी साहित्य अकादमी, हिंदी अध्यापक संघ, महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस सनातन धर्म टेम्पल्स फेडरेशन, आर्य रविवेद प्रचारिणी सभा आदि अनेक स्थानीय संस्थाओं / संगठनों के प्रमुख / प्रतिनिधियों सहित लगभग तीन सौ लोगों ने कार्यक्रम में भाग लिया । इस अवसर पर मॉरीशस के चार कवियों श्री धनराज शंभु, डॉ. हेमराज सुंदर, श्री गुलशन सुखलाल और डॉ. अलका धनपत द्वारा हिंदी कविताओं का पाठ भी किया गया, जिसका श्रोताओं ने भरपूर आनंद लिया ।

कार्यक्रम का सफल संचालन भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस में द्वितीय सचिव डॉ. जय प्रकाश कर्दम ने किया । ..

फुंछोलिंग (भूटान)

हिंदी दिवस पर उपस्थित विभिन्न कार्यालयों के अधिकारीगण

भूटान के सीमांत शहर फुंछोलिंग में भारत के महाकांसुलावास द्वारा पहली बार 'हिंदी दिवस ' और 'हिंदी पखवाड़ा ' मनाया गया । इस मौके पर 15 सितंबर, 2009 को चित्रकारी, कविता लेखन, छोटी कहानी / निबंध लेखन, वाद -विवाद व आशुभाषण प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं । इसमें महाकांसुलावास के अधिकारियों के अलावा यहाँ भारत सरकार के अन्य कार्यालय यथा सीमा सड़क संगठन, भारतीय सैन्य प्रशिक्षण दल (ईमट्राट), केंद्रीय जल आयोग तथा वापकोस के अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने भी हिस्सा लिया ।

इस समारोह में भूटान सरकार के उच्चाधिकारी, भूटान-भारत मैत्री संघ (बीफा) के महासचिव, फुंछोलिंग में कार्यरत भारतीय अधिकारी और भूटान तथा भारतीय समुदाय के गणमान्य व्यक्तियों सहित करीब 200 लोग उपस्थित थे । सीमा पार जयगांव स्थित भारतीय तथा फुंछोलिंग स्थित भूटानी स्कूलों के करीब 100 बच्चों ने भी इस कार्यक्रम में भाग लिया ।

सभी प्रतियोगियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए गए ।••

भारतीय आप्रवासी दिवस पर पुस्तकों का लोकार्पण

मुखलाल लोकमन

175 वें भारतीय आप्रवासी दिवस के संदर्भ में 31 अक्तूबर, 2009 को आर्य भवन, पोर्ट लुई में आर्य सभा मॉरीशस एवं इंद्रधनुष सांस्कृतिक परिषद द्वारा श्री प्रह्लाद रामशरण और उनकी पुत्री संगीता रामशरण नन्कू द्वारा लिखित एवं संपादित तीन ऐतिहासिक ग्रंथों का लोकार्पण समारोह संपन्न हुआ ।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में विराजमान थे माननीय अहमद बिबिजान, उप-प्रधान मंत्री, ऊर्जा नवीकरणीय एवं सार्वजनिक उपभोक्ता मंत्री ; विशिष्ठ अतिथि, माननीय श्री अनिल कुमार बेचू, सार्वजनिक अवसंरचना, भूमि परिवहन एवं जहाजरानी ; मंत्री माननीय डॉ. वसंत कुमार बनवारी, शिक्षा, संस्कृति एवं मानव संसाधन मंत्री और माननीय कल्याणी जग्गू निजी संसदीय सचिव ।

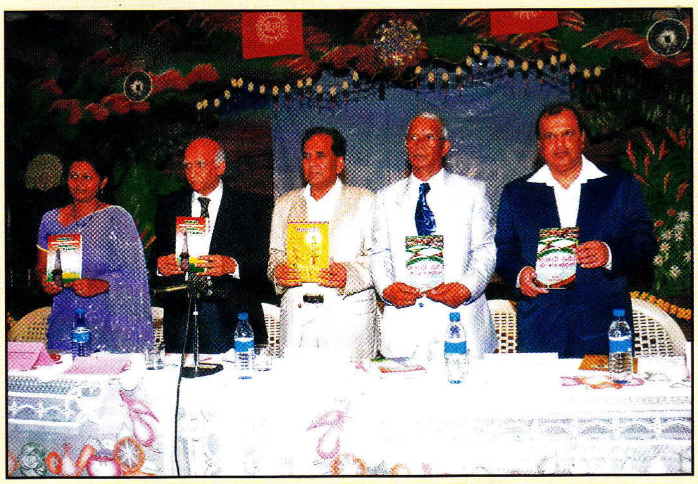

पुस्तकों का लोकार्पण करते दाहिने से मा. डॉ.वसंत कुमार बनवारी, लेखक प्रह्लाद रामशरण, मा.श्री अनिल कुमार बेचू, मा. अहमद बिबिजॉन और श्रीमती संगीता रामशरण नन्कू

अपने स्वागत भाषण में आर्य सभा, मॉरीशस के प्रधान श्री सत्यदेव प्रीतम ने भारतीय आप्रवासियों के संदर्भ में रचित ग्रंथों की सामयिक रचना के लिए दोनों रचनाकारों को धन्यवाद दिया । आर्य सभा के मंत्री डॉ. उदयनारायण गंगू ने इस देश के भारतीय आप्रवासियों के संघर्षमय जीवन की चर्चा की । भारतीय आप्रवासी शताब्दी ग्रंथ की सहभागी लेखिका, सुश्री संगीता रामशरण-नन्कू ने उन समस्याओं उल्लेख किया जिनके कारण आर्य भवन के सामने स्थापित ऐतिहासिक स्मारक ' शिला स्तंभ ' को अब तक सार्वजनिक मान्यता नहीं मिली है । अनुसंधाता प्रह्लाद रामशरण ने अपनी शोध-यात्रा के दौरान मिले रत्नों (उपलब्धियों) पर प्रकाश डाला, जिनमें जॉन दे लिंगन द्वारा अनूदित ' भगवद् गीता ' और पंडित लक्ष्मीनारायण चतुर्वेदी ' रसपुंज ' द्वारा काव्यबद्ध ' शताब्दी सरोज ' शामिल हैं ।

संसदीय सचिव कल्याणी जग्गू ने ' शताब्दी सरोज और अन्य कविताएँ ' के संपादक प्रह्लाद रामशरण को बधाई देते हुए कहा कि मॉरीशस द्वीप के इतिहास और भारतीय आप्रवासियों के दुःख-दर्द को काव्य में बांधकर पंडित लक्ष्मीनारायण चतुर्वेदी ने हमारे पूर्वजों को जो सम्मान दिया है वह अभूतपूर्व है।

शिक्षा, संस्कृति एवं मानव संसाधन मंत्री डॉ. वसंत कुमार बनवारी ने लेखक एवं संपादक, प्रह्लाद रामशरण के प्रयासों की सराहना की क्योंकि ' शताब्दी सरोज' जैसे दुर्लभ ग्रंथ का संपादन करके इन्होंने एक ओर मॉरीशस के हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है तो दूसरी ओर आनेवाली पीढ़ी के सामने इतिहास के अछूते अंश को प्रस्तुत करके श्लाघनीय कार्य किया है ।

सार्वजनिक संरचना, भूमि परिवहन एवं जहाजरानी मंत्री माननीय श्री अनिल कुमार बेचू ने अपने वक्तव्य में 'भगवद् गीता ' पर बोलते हुए कहा कि बीसवीं सदी के पूर्वार्ध में एक अंग्रेज कवि द्वारा मॉरीशस की धरती पर ' गीता ' जैसे दार्शनिक ग्रंथ का अनुवाद एक वरदान था । उन्होंने कहा कि ' गीता ' वैदिक वाङ्मय में उच्चकोटि का ग्रंथ माना जाता है और इसका संपादन करके प्रह्लाद रामशरण ने इस क्षेत्र में सराहनीय कार्य किया है ।

उप प्रधानमंत्री, ऊर्जा नवीकरणीय एवं सार्वजनिक उपभोक्ता मंत्री, माननीय अहमद रशीद बिबिजान ने अपने वक्तव्य में कहा कि - ' भारतीय शताब्दी समारोह और उनकी छिपी फुलिकाएँ ' ग्रंथ के प्रत्येक पृष्ठ में जो तथ्य दिये गये हैं वे उस अनछुए इतिहास को प्रस्तुत करते हैं जो आज तक अनजाने रहे हैं । इतिहास की इस कालावधि को बड़ी खूबी के साथ प्रह्लाद रामशरण और संगीता रामशरण-नन्कू ने प्रस्तुत किया है, इसके लिए दोनों को उनके परिश्रम के लिए धन्यवाद दिया जाना चाहिए । भारतीय आप्रवासी शताब्दी के अवसर पर जिस ' स्मृति शिला-स्तंभ ' का अनावरण 29 दिसंबर, 1935 को किया गया था उसको सार्वजनिक मान्यता दिलाने के लिए उचित कार्य किया जाएगा ।

समारोह के अंत में तीनों ग्रंथों का लोकार्पण निम्नलिखित महानुभावों द्वारा संपन्न हुआ :

माननीय डॉ. वसंत कुमार बनवारी ' शताब्दी सरोज और अन्य कविताएँ '
माननीय श्री अनिल कुमार बेचू ' भगवद्गीता '
माननीय अहमद रशीद बिबिजान ' भारतीय शताब्दी समारोह और उनकी छिपी फुलिकाएँ '

इस तरह एक बहुत ही उत्साह भरे वातावरण में यह लोकार्पण समारोह संपन्न हुआ । ••

संपादक 05.06.2009
विश्व हिंदी समाचार,
मॉरीशस

विश्व हिंदी समाचार का मार्च, 2009 का अंक कतिपय महत्वपूर्ण सूचनाओं के साथ हिंदी के प्रति दृष्टिकोण निर्माण के संदर्भ में उल्लेखनीय है । ' जन-बल बने भाषा-बल' में डॉ. विनोद बाला अरुण ने ठीक ही लिखा है कि भारतीय आहार व्यवहार, योग आयुर्वेद और अध्यात्म दर्शन की उपयोगिता को विश्व श्रद्धापूर्वक स्वीकार कर रहा है । इस संदर्भ में मेरा अपना अनुभव एक रूसी छात्र को लेकर है । वह रूसी छात्र हिंदी इसलिए सीखना चाहता था ताकि आयुर्वेद और भारतीय संगीत सीख सके और सीखकर झील के किनारे अपना हेल्थ रिसॉर्ट शुरू कर सके । इस प्रकार हिंदी की स्वीकार्यता का विस्तार होगा ।

इसी अंक में संपादकीय में ' विश्व हिंदी दिवस' मनाने का आग्रह महत्वपूर्ण व सार्थक प्रस्ताव है । किंतु यह स्पष्ट नहीं है कि 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाने के साथ-साथ 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस भी मनाया जाए या उनका आग्रह हिंदी दिवस की बजाये विश्व हिंदी दिवस मनाने को लेकर है ?

साभिवादन !

भवदीय

डॉ. हीरालाल बाछोतिया, **के – 40 एफ साकेत,**
नई दिल्ली : 110 017

महासचिव की ओर से

नए संकल्प की बेला

हिंदी के प्रचार-प्रसार में स्वयंसेवी संस्थाओं की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण रही है। 19 वीं शताब्दी में महर्षि दयानंद ने आर्यसमाज के आंदोलन में संगठित रूप से हिंदी का प्रयोग करके और 20 वीं शताब्दी में महात्मा गांधी ने अपने राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आंदोलन में हिंदी का जनभाषा के रूप में उपयोग करके इसे संपूर्ण भारत में प्रचलित किया।

महात्मा गांधी के समर्थन और सहयोग से अनेक संस्थाओं ने हिंदी के भारतव्यापी कार्य को गति दी। नागरी प्रचारिणी सभा, काशी; हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग; दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास; राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा; हिंदी विद्यापीठ, बंबई; महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे और बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना आदि स्वैच्छिक संस्थाओं ने हिंदी के उन्नयन में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

19 वीं शताब्दी में जब भारतीय मज़दूर गिरमिटिया बनकर मॉरीशस, फीजी, गयाना, सूरीनाम, त्रिनिडाड एंड टोबैगो और दक्षिण अफ्रीका गए तो अपने साथ अपनी भाषा भी ले गए । अपनी जड़ों से अलग होकर यद्यपि वे असहाय थे लेकिन अपनी भाषा से जुड़े रहने की उनकी इच्छा अत्यन्त बलवती थी । एतदर्थ उन्होंने संगठित रूप से प्रयत्न किया । अपने सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन के संरक्षण-संवर्धन के लिए उन्होंने संस्थाएँ बनाईं जहाँ बच्चों को हिंदी भी पढ़ाई जाती थी।

मॉरीशस में इसी तरह की एक संस्था का गठन हुआ जिसे "बैठका" नाम दिया गया । अपने समय में "बैठका" एक ऐसी चट्टानी व्यवस्था थी जो भाषा और संस्कृति पर आने वाले विजातीय प्रभाव की लहर को बलपूर्वक रोकती थी । बैठका व्यवस्था हिंदीभाषी हिंदुओं की प्राणशक्ति थी। यहीं बैठकर वे अपने सामाजिक-सांस्कृतिक निर्णय लेते थे। एक तरह से यह उनके जीवन की प्रशासन समिति थी। हिंदी इसी के बल पर मॉरीशस में सुरक्षित रही ।

कालांतर में समाजसेवी संस्थाओं ने अनेक हिंदी पाठशालाएँ खोलीं । इस दिशा में आर्य समाज का योगदान सर्वाधिक सराहनीय है । आर्य रविवेद प्रचारिणी सभा ने भी हिंदी की पढ़ाई अनेक पाठशालाओं में आरंभ की ।

हिंदी प्रचारिणी सभा ने हिंदी के पठन-पाठन को नया आयाम दिया। फलस्वरूप हज़ारों छात्रों को हिंदी भाषा और साहित्य का उच्च ज्ञान प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ। इस व्यापक प्रचार-प्रसार के कारण हिंदी की स्थिति मॉरीशस में सुदृढ़ हुई। मॉरीशस की ही तरह फीजी में भी प्रवासी भारतीयों की बहुसंख्या के कारण हिंदी के लिए अनुकूल वातावरण था। आर्यसमाज और श्री सनातन धर्मसभा ने हिंदी के प्रचार केलिए भरपूर प्रयत्न किए। आज हिंदी फीजी की संसद में बोली जाने वाली एक मान्यता प्राप्त भाषा है।

त्रिनिडाड एंड टोबैगो में सनातन धर्मसभा और भारतीय विद्या संस्थान जैसी कई संस्थाओं ने हिंदी-शिक्षण के लिए कार्य किया। गयाना में आर्यसमाज के प्रचारक भाई परमानंद और महात्मा गांधी के सहयोगी दीनबंधु सी.एफ.एंड्रयूज़ के प्रयत्नों से आर्यसमाज मंदिरों एवं अन्य समाजसेवी संगठनों में हिंदी की शिक्षा आरंभ हुई। सूरीनाम में आर्यसमाज और सनातन धर्म की सभाओं ने हिंदी-पठन-पाठन को गति देने का भरपूर प्रयत्न किया। दक्षिण अफ्रीका में अनेक रामायण सभाएँ बनीं जो रामायण पढ़ने के लिए लोगों को हिंदी सिखाती थीं।

20वीं शताब्दी में प्रवास का एक नया सिलसिला आरंभ हुआ। वाणिज्य-व्यापार करने और उच्च स्तरीय रोज़गार प्राप्त करने के लिए अनेक भारतीय विकसित देशों में जा बसे। इन्होंने भी अपनी भाषा और संस्कृति के संरक्षण हेतु अनेक स्वैच्छिक संस्थाएँ बनाकर प्रतिबद्धता पूर्वक हिंदी शिक्षण का कार्य आरंभ किया ताकि उनकी संतानें अपनी भाषा और संस्कृति से जुड़ी रहें।

हिंदी के उन्नयन में स्वयंसेवी संस्थाओं की भूमिका पर एक विहंगम दृष्टि डालने से पता चलता है कि इनके प्रयत्न के कारण ही हिंदी के पक्ष में वातावरण बना और हिंदी अनेक देशों में औपचारिक शिक्षा में स्थान पा सकी। आज इन संस्थाओं की भूमिका और भी बढ़ गई है। आज सबसे बड़ी आवश्यकता है:

- अपने - अपने स्तर और अपने-अपने ढंग से कार्य करने वाली ये संस्थाएँ संगठित और सुनियोजित रूप से हिंदी-शिक्षण के कार्य को आगे बढ़ाएँ ताकि उनके निवास के देशों में एक ऐसा जनमत बने जिससे उन देशों की सरकारें हिंदी शिक्षण को औपचारिक शिक्षा-व्यवस्था में स्थान देने के विषय में सोचें।

- हिंदी शिक्षण को अधिक अधुनातन और रोचक बनाया जाए ताकि हिंदी सीखने के प्रति छात्रों में रुझान पैदा हो।

- घर में और सांस्कृतिक समारोहों में अधिक से अधिक हिंदी के प्रयोग पर बल दिया जाए।

- हिंदी को नागरी लिपि में ही पढ़ा और लिखा जाए। आज अनेक देशों में हिंदी समझने और बोलने वाले लोग नागरी लिपि का अभ्यास न होने के कारण हिंदी पढ़ने और लिखने के लिए रोमन लिपि का प्रयोग करते हैं। यह स्थिति हिंदी के लिए अत्यंत घातक है। अतएव नागरी लिपि के अधिकाधिक प्रयोग पर बल देने की आवश्यकता है।

मैं ऐसा समझती हूँ कि वर्तमान समय में हिंदी के वैश्विक उन्नयन की संभावनाएँ अनंत हैं। हमें समर्पित भाव से प्रयत्न करने के लिए नव वर्ष पर संकल्प लेना है जिससे हिंदी के मार्ग में आने वाली चुनौतियों का हम सामना कर सकें और प्राप्त अवसरों का अपने उद्देश्य की संपूर्ति के लिए समुचित उपयोग कर सकें। हिंदी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता ही नव वर्ष की सबसे बड़ी शुभकामना है।

डॉ. (श्रीमती) विनोदबाला अरुण

संपादकीय

साकार होता संकल्प

' विश्व हिंदी समाचार ' का दिसंबर, 2009 में प्रकाशित यह आठवाँ त्रैमासिक अंक है । सितंबर, 2009 में देश-विदेश के हिंदी प्रेमियों ने बढ़-चढ़कर 'हिंदी दिवस ' मनाया । इस बीच अनेक स्थानों से ' हिंदी दिवस ' मनाए जाने की रिपोर्टें हमें प्रकाशनार्थ प्राप्त हुई हैं । पत्रिका के लघु कलेवर के कारण इस अंक में केवल ' मॉरीशस उच्चायोग ' एवं ' भूटान ' में मनाए गए ' हिंदी दिवस ' की संक्षिप्त रिपोर्टें प्रकाशित कर रहे हैं ।

पिछले अंकों में हमने विश्वव्यापी हिंदी प्रेमियों से हर साल 10 जनवरी को ' विश्व हिंदी दिवस ' मनाने का अनुरोध किया है । मुझे विश्वास है कि कुछ सरकारी एवं स्वयं-सेवी संस्थाएँ 10 जनवरी, 2010 को ' विश्व हिंदी दिवस ' मनाने की तैयारी कर रही होंगी। मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय ,भारतीय उच्चायोग , इंदिरा गाँधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र एवं हिंदी संगठन एक साथ मिलकर 10 जनवरी को ' विश्व हिंदी दिवस ' मनाने की तैयारी में जुट गए हैं। अन्य हिंदी-सेवी संस्थाएँ भी इसकी तैयारी कर रही हैं।

आपको स्मरण होगा कि 10 जनवरी, 1975 को ' प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन ' का शुभारंभ नागपुर, भारत में हुआ था । अत: इस ऐतिहासिक तिथि को याद रखने के साथ ही पूरी दुनिया में हिंदीमय वातावरण बनाने के लिए प्रति वर्ष 10 जनवरी का दिन ' विश्व हिंदी दिवस ' के रूप में मनाने का निर्णय विदेश मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा सन् 2006 में लिया गया था । अब हर साल हिंदी प्रेमी 14 सितंबर को भारत में ' हिंदी दिवस ' और 10 जनवरी को पूरे विश्व में 'विश्व हिंदी दिवस ' मनाने लगे हैं ।

10 से 14 जनवरी, 1975 तक नागपुर में हुए ' प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन ' में जो तीन महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किए गए थे, उनमें से एक प्रस्ताव यह भी था कि ' वर्धा में विश्व हिंदी विद्यापीठ की स्थापना हो '। इस प्रस्ताव को पूरा करने के लिए भारत की संसद द्वारा 1996 ई. में पारित अधिनियम के अनुसार 1997 ई. में ' महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय ' की स्थापना वर्धा में हुई । भारत का यह अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की कर्मभूमि सेवाग्राम (वर्धा) से छह किलोमीटर दूर मुंबई-नागपुर हाइवे पर उमरी गाँव के निकट गाँधी हिल्स पर बनाया गया है । इस तरह 1975 ई. में लिया गया संकल्प 1997 में फलीभूत हुआ । संकल्प पूरा करने में समय तो लगा , किंतु उसके परिणाम अभूतपूर्व हैं । कहा भी जाता है कि ' देर आए दुरुस्त आए '। इस अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में न केवल हिंदी भाषा और साहित्य की पढ़ाई होती है, बल्कि संस्कृति, अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठों के अंतर्गत असंख्य नए-नए पाठ्यक्रम शुरू किए गए हैं। हिंदी को लोकप्रिय बनाने के लिए 'दूर शिक्षा कार्यक्रम ' के अंतर्गत भी कई आकर्षक एवं रोज़गार से जुड़े पाठ्यक्रम चलाए जा रहे हैं। इतना ही नहीं, पारंपरिक पुस्तकालय के साथ-साथ डिज़िटल पुस्तकालय का भी विकास करना इस हिंदी विश्वविद्यालय की योजनाओं का एक अंग है । विश्वविद्यालय की कुछ अनूठी योजनाओं के अंतर्गत मौलिक और मानक-ग्रंथों का प्रकाशन, दुर्लभ पांडुलिपियों, चित्रों, दस्तावेज़ आदि का संग्रह, विश्वकोशों और संदर्भ कोशों का निर्माण आदि शामिल हैं । विश्वविद्यालय की योजना है कि यह भारतेंदु हरिश्चंद्र से लेकर 1950 तक के कॉपीराइटमुक्त हिंदी साहित्य के चुनिंदा एक लाख पृष्ठों की सामग्री ' हिंदी समयडॉटकाम ' नामक वेबसाइट पर उपलब्ध करवाएगा । हिंदी के अनेक लेखकों के परिचय भी इसी वेबसाइट पर दिए गए हैं। इसके अलावा छात्रों के लिए छात्रावास की भी व्यवस्था है । विदेशों से यहाँ हिंदी पढ़ने आनेवाले विद्यार्थियों के लिए ' विश्वभाषा हिंदी ' में एक वर्षीय डिप्लोमा एवं ' हिंदी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति ' विषय में तीन वर्षीय बी.ए. पाठ्यक्रम भी चलाया जाता है।

अपने जिस महत्वपूर्ण कार्य के लिए यह विश्वविद्यालय देश-विदेश के हिंदी लेखकों और पाठकों से जुड़ा हुआ है, वह है ' बहुवचन ' और ' पुस्तक वार्ता ' नामक हिंदी की दो महत्वपूर्ण एवं संग्रहणीय पत्रिकाओं का प्रकाशन । इन पत्रिकाओं में शामिल उत्कृष्ट और अद्यतन सामग्री के लिए इनके अनुभवी व कर्मठ संपादकों के साथ ही विश्वविद्यालय के कुलपति एवं हिंदी के सुप्रसिद्ध कथाकार श्री विभूति नारायण राय की दूरदर्शिता और बुद्धिमत्ता की जितनी भी प्रशंसा की जाए वह कम है । यह निश्चित ही उनके कुशल मार्गदर्शन का ही परिणाम है कि आज यह विश्वविद्यालय अपने प्रकाशन संबंधी कार्यक्रम को नित नए-नए अंज़ाम दे रहा है ।

महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की गतिविधियों से प्रभावित होकर मॉरीशस के महामहिम राष्ट्रपति सर अनिरुद्ध जगन्नाथ 9 दिसंबर, 2009 को इस अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के ' दीक्षांत समारोह ' में विशिष्ट अतिथि के रूप में भाग लेने वर्धा गए थे जहाँ उन्हें डी. लिट् की मानद उपाधि से विभूषित किया गया। निश्चित ही 'प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन' में पारित यह संकल्प सही अर्थों में साकार हो रहा है ।

समस्त हिंदी प्रेमियों को नववर्ष : 2010
एवं
' विश्व हिंदी दिवस ' की शुभकामनाएँ

(डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र)

प्रधान संपादक
डॉ. (श्रीमती) विनोदबाला अरुण
संपादक
डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र
विश्व हिंदी सचिवालय
स्विफ्ट लेन, फॉरेस्ट साइड, मॉरीशस

World Hindi Secretariat
Swift Lane, Forest Side, Mauritius
Phone (230) 6761196
Fax (230) 6761224
E-mail : whsmauritius@intnet.mu
sgwhs@intnet.mu / dsgwhs@intnet.mu

टोक्यो के आसपास हिंदी शिक्षण

प्रो. योशिफुमि मिजुनो (जापान)

आज मैं यह परिचय देना चाहता हूँ कि हमारे देश की राजधानी, टोक्यो में और इसके उपनगरों में हिंदी का शिक्षण कितने बड़े पैमाने पर कैसे किया जाता है, और इसका थोड़ा इतिहास भी बताऊँगा ।

सबसे पहले मैं यह बताना चाहता हूँ कि टोक्यो कितना बड़ा है । टोक्यो की जनसंख्या लगभग एक करोड़ बीस लाख है, यह दिल्ली से करीब बीस लाख कम है और बीजिंग (चीन के) से करीब दस लाख कम है । लेकिन टोक्यो के उपनगर, सइतामा, चिबा तथा कनागावा भी एक सांस्कृतिक क्षेत्र के रूप में देखे जा सकते हैं, इन क्षेत्रों की जनसंख्या जोडूँ तो तीन करोड़ से अधिक हो जाती है । कितना बड़ा शहर है टोक्यो, यह आप लोगों को मालूम हुआ होगा ।

इतने बड़े शहर टोक्यो में कितने ज़्यादा लोग हिंदी सीखते हैं, इसके बारे में मैं अब परिचय दूँगा । यह सुनकर आप लोगों को ज्यादा लगेगा या कम लगेगा, शायद दोनों हो सकता है ।

टोक्यो में सरकारी और गैरसरकारी विश्वविद्यालय कुल मिलाकर 114 हैं, अगर उपनगरों के विश्वविद्यालयों को भी जोड़ तो 185 होते हैं । इनमें से 10-12 विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है । इनके अतिरिक्त कार्यकर्ताओं के लिए 5-6 गैरसरकारी भाषा विद्यालयों में भी हिंदी की कुछ-कुछ कक्षाएँ लगती हैं ।

जापान में शैक्षिक वर्ष अप्रैल की पहली तारीख से शुरू होता है । मेरे मोटे हिसाब लगाने पर प्रत्येक वर्ष टोक्यो में ही कम से कम दो सौ छात्र या लोग हिंदी पढ़ना शुरू करते होंगे ।

इस विश्वविद्यालय के हिंदी शिक्षण के बारे में बताने से पहले, कुछ गैरसरकारी विश्वविद्यालयों के बारे में परिचय दूँगा । आगे मैं जिस कक्षा शब्द का उपयोग करूँगा उसका मतलब तो यह है कि प्राय: प्रत्येक हफ़्ते 90 मिनट की है और आधे साल में (असल में चार महीने में) 15 बार चलाई जाती है । एक शैक्षणिक वर्ष में प्राय: दो सत्र हैं, अप्रैल से सितंबर तक और अक्टूबर से मार्च तक । लेकिन छात्रों को अगस्त तथा सितंबर गर्मी की छुट्टियाँ और फरवरी के बीच दो महीनों के दौरान भी छुट्टियाँ होती हैं । जिस विभाग के सारे छात्र अनिवार्य रूप से हिंदी सीखते हैं, वैसा विभाग तोकाई विश्वविद्यालय के कला संकाय में 1970 तक था । उस विभाग में प्रत्येक वर्ष तीस छात्र दाखिल होते थे, वे हर हफ़्ते चार-चार कक्षाओं में पढ़कर एक वर्ष में आधारभूत व्याकरण सीख लेते थे । लेकिन अब उस विश्वविद्यालय में कार्यक्रम बिल्कुल बदल गया है, छात्र अनिवार्य रूप से नहीं अपनी इच्छा से चुनकर हिंदी पढ़ते है ।

दूसरे सारे गैर-सरकारी विश्वविद्यालयों में भी इसी तरह छात्र कुछ भाषाओं में से हिंदी चुनकर पढ़ते हैं । दाइतो-बुनका विश्वविद्यालयों के अंतर्राष्ट्रीय संबंध संकाय में पहले तथा दूसरे दर्जेवाले छात्र तथा तीसरे दर्जेवाले छात्र एक हफ़्ते में तीन-तीन कक्षाओं में हिंदी पढ़ते हैं । ताकुशोकु विश्वविद्यालय में पहले तथा दूसरे दर्जेवाले छात्र एक हफ़्ते में दो कक्षाओं में हिंदी पढ़ते हैं । इन कक्षाओं में दस से लेकर बीस तक छात्र पढ़ते होंगे । टोक्यो विश्वविद्यालय में एक सप्ताह में केवल एक कक्षा चलती है पर इस साल उसमें करीब नब्बे छात्र पढ़ते हैं, ऐसा मैंने सुना है ।

इनमें ताकुशोकु विश्वविद्यालय की कक्षाओं में बाहर से कार्यकर्त्ता भी उपस्थित हो सकते हैं ।

इनके अलावा टोक्यो और उपनगरों में जो कुछ विश्वविद्यालय बौद्ध धर्म के संप्रदायों द्वारा चलाए जाते हैं उनमें से कुछ विश्वविद्यालयों में भी हिंदी पढ़ाई जाती है पर छात्रों की संख्या इतनी ज्यादा नहीं होती है ।

टोक्यो में जिन सरकारी विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है, वे हैं टोक्यो विदेशी अध्ययन विश्वविद्यालय और टोक्यो विश्वविद्यालय । टोक्यो विश्वविद्यालय में भारतीय दर्शन का विभाग है, उसके छात्र संस्कृत रचनाएँ बहुत पढ़ते हैं पर हिंदी कम पढ़ते हैं । हमारे सहयोगी प्रो. फुजिइ जी दो कक्षाएँ पढ़ाते हैं ।

अंत में अपने इस विश्वविद्यालय के बारे में थोड़े विस्तार से परिचय दूँगा। हमारे इस विश्वविद्यालय में हिंदी-शिक्षण का बहुत लंबा इतिहास है । हमारे विभाग में हर साल पंद्रह से कुछ ज्यादा छात्र दाखिल होते हैं । हमारा कार्यक्रम तीन साल पहले बदल गया । तब तक ऐसा था कि पहले दर्जेवाले छात्रों को एक हफ़्ते में छह कक्षाओं में पढ़ना होता था । इन छह कक्षाओं को हम तीन अध्यापक दो दो में बाँट लेते थे । दोनों सत्रों के अंत में परीक्षा लेते थे, परीक्षा परिणाम एक वर्ष के अंत में देते थे । हम तीनों अध्यापक प्रत्येक छात्र के विषय में चर्चा करके श्रेष्ठ से उत्तीर्ण होने तक परिणाम बनाकर देते थे । अगर तीन परिणामों में से सिर्फ एक ही में उत्तीर्ण हो तो, उस छात्र को फिर एक साल के लिए पहले दर्जेवाली कक्षाओं में पढ़ना पढ़ता था । इसी तरह छात्रों को पहले तथा दूसरे दर्जे में छह-छह कक्षाओं में हिंदी पढ़नी है लेकिन तीसरे तथा चौथे दर्जे में तो सिर्फ एक-एक कक्षा ही पढ़नी पड़ती थी ।

यह नियम तो पहले से एक ही है कि छात्रों को स्नातक होने तक कुल मिलाकर 28 क्रेडिट्स चाहिए । नया कार्यक्रम ऐसा है कि एक सत्र की प्रत्येक कक्षा के प्रति व्याकरण, रचना, बातचीत तथा रीडर वगैरह वर्ग और प्राथमिक, मध्य तथा उत्तम वगैरह श्रेणी दी गई है । छात्र एक हफ़्ते में प्राय: 5 कक्षाओं में पढ़कर एक सत्र के अंत में प्रत्येक कक्षा के अनुसार परिणाम ले सकते हैं । अगर कोई छात्र व्याकरण की कक्षा की परीक्षा में उतीर्ण नहीं हो सका है तो अगले सत्र में भी उसी श्रेणी की कक्षा में फिर पढ़ सकता है । इसी तरह जो छात्र केवल भाषाओं का ही नहीं दूसरे सांस्कृतिक, ऐतिहासिक या सामाजिक कक्षाओं के आवश्यक क्रेडिट्स ले पाया है वह भी स्नातक हो सकता है ।

इस नए कार्यक्रम की कक्षाओं में तो दूसरे ग्रेजुएट स्कूल के छात्र या कार्यकर्ता भी अपनी हिंदी की क्षमता के अनुसार उपस्थित हो सकते हैं ।

अमेरिका में सक्रिय कुछ हिंदी पाठशालाएँ

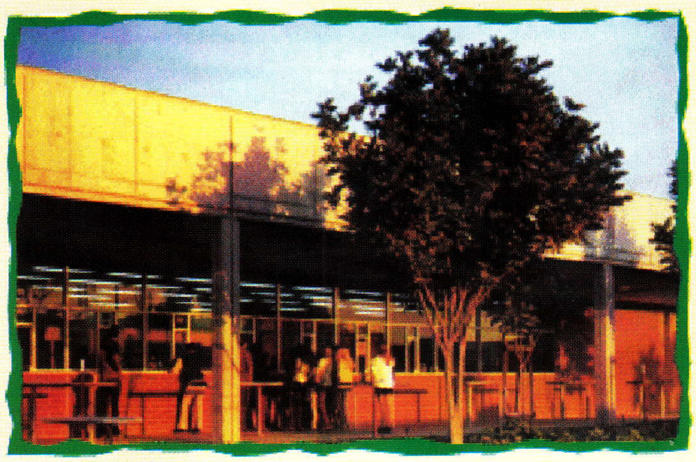

अमेरिका के ' एडिसन स्कूल बोर्ड ' के निमंत्रण पर भारत से तीन हिंदी अध्यापिकाओं का एक दल वहाँ के स्कूलों में चलाए जा रहे हिंदी पाठ्यक्रमों की जानकारी प्राप्त करने अमेरिका पहुँचा । इन तीनों अध्यापिकाओं ; श्रीमती सुनीता भागवत (Director, iEARN, India) श्रीमती वृंदा गोसावी एवं श्रीमती ममता शर्मा (St. Gregorious High School, Mumbai) ने वहाँ के ' एडिसन हिंदी पाठशाला ' का अवलोकन किया और उस पाठशाला की अत्यंत सराहना की ।

स्कूल की भव्यता देखकर उन्हें अत्यंत आश्चर्य हुआ । वे अध्यापिकाएँ सभी कक्षाओं में जा-जाकर छात्रों एवं शिक्षकों से मिलीं । कक्षाओं में प्रवेश करते ही छात्रों ने हाथ जोड़कर उन्हें नमस्ते कर उनका स्वागत और अभिवादन किया । वहाँ के छात्रों में ऐसे संस्कार देखकर शिक्षकों को अत्यंत प्रसन्नता हुई । अध्यापिकाओं को बताया गया कि हिंदी यू.एस.ए. का उद्देश्य छात्रों को केवल किताबी शिक्षा देना नहीं है, बल्कि उन्हें अपने संस्कारों से भी परिचित कराते हुए आनेवाली पीढ़ियों के लिए एक धरोहर स्थापित करना है। इसका श्रेय निश्चित ही स्कूल के कर्मठ और समर्पित शिक्षकों को एवं सबसे पुराने स्वयंसेवकों में से एक श्री राज मित्तल को जाता है । श्री मित्तल हिंदी यू.एस.ए. के संस्थापक सदस्य हैं । उनकी निष्ठा और लगन से हिंदी यू.एस.ए. की एडिसन पाठशाला आज अमेरिका की सबसे बड़ी पाठशाला बन गई है । अमेरिका की कुछ अन्य हिंदी पाठशालाएँ निम्न हैं :

फ्रैंकलिन हिंदी पाठशाला

फ्रैंकलिन हिंदी पाठशाला अपने में अद्वितीय है । मुंबई में पली-बढ़ी, सुश्री मंजू मौर्य, अब सोमरसेट में रहती हैं । बंबई विश्वविद्यालय से इन्होंने रसायन में एम. एससी. की है । मंजू जी ' फ्रैंकलिन हिंदी पाठशाला ' चलाने के साथ-साथ प्रथमा-2 हिंदी पाठ्यक्रम की शिक्षिका भी हैं ।

यहाँ के संचालक श्री भूपेंद्र जी और शिक्षिकाएँ बहुत लगन और कर्तव्यनिष्ठा से हिंदी पढाने में लगे हैं । यहाँ के संचालक हमेशा नए-नए माध्यमों से बच्चों और अभिभावकों का ध्यान खींचते हैं । फ्रैंकलिन पाठशाला को शुरू हुए तीन वर्ष हो गए हैं । यहाँ का वातावरण ऐसा है कि बच्चे हिंदी पाठशाला आने के लिए अपने अभिभावकों को खींच कर लाते हैं ।

फ्रैंकलिन में कक्षाओं में हर त्योहार की जानकारी बच्चों को दी जाती है और उन्हें मनाने के तरीके भी विस्तार से सिखाए जाते हैं । पिछले दिनों दीवाली का पर्व भी बड़ी धूमधाम से मनाया गया । बच्चे नए परिधान में बहुत सुंदर लग रहे थे । दीवाली के उपलक्ष्य में बच्चों ने सुंदर-सुंदर बधाई-पत्र भी बनाए थे जो उन्होंने अपने परिवार को भेंट किए । फ्रैंकलिन पाठशाला में अभिभावकों का संपूर्ण सहयोग प्राप्त है । कई अभिभावक तो शिक्षकों के रूप में भी योगदान दे रहे हैं ।

ट्रमबल, कनेक्टिकट हिंदी पाठशाला

विश्व में बोली जानेवाली भाषाओं में हिंदी दूसरा स्थान रखती है । यहाँ तक कि कुछ कवियों ने भी कहा है कि हिंदी के अतिरिक्त कोई और भाषा नहीं है जो मनुष्य के मन की गहराई और भावनाओं को अद्भुत रूप से प्रकट कर सके ।

सुगठित पाठयक्रम के अभाव के कारण ही कनेक्टिकट में रहनेवाले आप्रवासी भारतीय अपने बच्चों को हिंदी नहीं सिखा पाते और विद्यार्थी किसी दूसरी भाषा का चुनाव कर लेते हैं ।

एच.सी.सी. के सदस्य श्री संजीव और सुश्री प्रीति वाधवा अपने बच्चों को हिंदी सिखाने का असफल प्रयास करते रहे । सौभाग्य से स्वयंसेवी संस्था हिंदी यू. एस. ए. ने ट्रमबल में हिंदी पाठशाला खोलने का प्रस्ताव रखा । हिंदी यू. एस. ए. संस्था अमेरिका के विभिन्न राज्यों में बच्चों को हिंदी पढ़ाने का काम कर रही है ।

हिंदी यू. एस. ए. द्वारा पाठशालाओं में पढ़ानेवाले सभी शिक्षकों को प्रशिक्षण और शिक्षण सामग्री नि:शुल्क उपलब्ध करवाई जाती है । प्रत्येक स्तर के लिए उपयोग में आनेवाली पुस्तकें भी हिंदी यू. एस. ए. द्वारा उपलब्ध करवाई जाती हैं । अभिभावकों को प्रोत्साहित किया जाता है कि अगले सत्र के लिए बच्चों का हिंदी कक्षा के लिए पंजीकरण पहले से ही करवा लें । यह कार्यक्रम हिंदी यू. एस. ए. के संस्थापक श्री देवेंद्र जी तथा श्रीमती रचिता सिंह जी के पूर्ण सहयोग से ही संभव हो सका है । देवेंद्र जी व रचिता जी सदा ही हिंदी के कार्य के लिए बहुत ही सहयोगी व सहायक रहे हैं ।

ब्रिजवाटर हिंदी पाठशाला

ब्रिजवाटर हिंदी पाठशाला में अध्यापक, अध्यापिकाओं और अभिभावकों के सौजन्य से दीवाली भी खूब धूमधाम से मनाई गई । बच्चों ने भी अपना उत्साह दिखाया । सभी बच्चे और अध्यापक, अध्यापिकाओं ने भारतीय परिधान पहनकर दीपावली त्योहार की शोभा को दुगना कर दिया । शिक्षकों ने छात्रों को दीवाली से संबंधित जानकारी दी ।

कक्षाओं में बच्चों ने श्वेत पट, कागज़ की प्लेट और पन्नों पर रंगों से रंगोली तथा शुभ दीपावली कार्ड बनाए । सारा वातावरण दीपावलीमय हो गया । सभी बच्चों, अध्यापक, अध्यापिकाओं और अभिभावकों को मिठाई वितरित की गई । सब लोग बहुत खुश दिख रहे थे । इस प्रकार सब बच्चों, अध्यापकों, अध्यापिकाओं और अभिभावकों के सहयोग से ब्रिजवाटर स्कूल में दीवाली का त्योहार धूमधाम से संपन्न हुआ ।

पिस्कैटेवे हिंदी पाठशाला

पिस्कैटेवे पाठशाला की जितनी भी प्रशंसा की जाए वह कम है । यहाँ के स्वयंसेवकों ने दो ही वर्षों में इस पाठशाला की एक विशेष पहचान स्थापित की है ।

एडिसन हिंदी पाठशाला में दीपावली

एडिसन हिंदी पाठशाला में सभी अध्यापकों, छात्रों, अभिभावकों एवं स्वयंसेवकों ने मिलकर बहुत धूम-धाम से दीवाली मनाई । सभी छात्र पारंपरिक भारतीय परिधानों में सज-धज कर पाठशाला में आए तथा इस पर्व का समुचित आनंद लिया । शिक्षकों का भी उत्साह इस पर्व के प्रति देखते ही बनता था । सभी ने छात्रों को दीवाली के बारे में जानकारी प्रदान की । छात्रों ने बोर्ड पर दीवाली के विभिन्न चित्र, रंगोली इत्यादि बनाई । दीवाली मनाने के विभिन्न कारण एवं इसके इतिहास की जानकारी भी छात्रों को दी गई ।

इस तरह अमेरिका में बसे भारतीय अपनी भाषा और संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए प्रयासरत हैं । इस दिशा में आनेवाली कठिनाइयों का सामना वे साथ मिलकर करते हैं । यही कारण है कि आज अमेरिका में हिंदी पाठशालाओं की एक लंबी सूची बन गई है । ••

डॉ. अभिमन्यु अनत और प्रो. पुष्पिता अवस्थी को शमशेर सम्मान

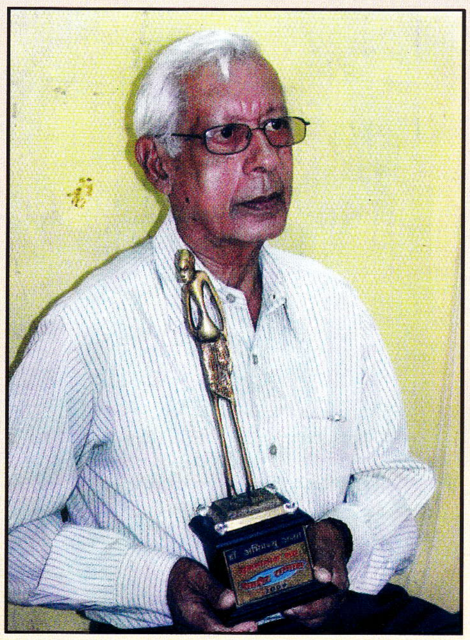

डॉ.अभिमन्यु अनत

प्रो.पुष्पिता अवस्थी

6 नवंबर, 2009 को मध्यप्रदेश की साहित्यिक संस्था 'अनवरत' द्वारा गत वर्षों की तरह गद्य के लिए मॉरीशस के श्री अभिमन्यु अनत और काव्य के लिए विशिष्ट 'शमशेर सम्मान' प्रो पुष्पिता अवस्थी को प्रदान किया गया । पिछले तेरह वर्षों से यह संस्था साहित्य की दो विधाओं के लिए चुनिंदा साहित्यकारों को सम्मानित करती आ रही है ।

मॉरीशस के कथाकार डॉ. अभिमन्यु अनत के साहित्यिक कृतित्व और व्यक्तित्व पर कवि केदारनाथ सिंह ने अपने वक्तव्य में कहा कि अभिमन्यु जी को सम्मानित करके हम उनका गौरव नहीं बढ़ा रहे हैं, बल्कि ऐसा करके हम अपना गौरव बढ़ा रहे हैं। उन्होंने दोनों साहित्यकारों को अपनी बधाई और शुभकामनाएँ सौंपी।

इस अवसर पर आकाशवाणी के महानिदेशक और कवि श्री लीलाधर मंडलोई ने पुष्पिता की काव्य - यात्रा का संक्षिप्त परिचय देते हुए कहा कि - ''पुष्पिता अलक्षित जीवन, समय और समाज को अपनी कविता में विशेष रूप से उकेरने का कार्य करती है । अपने वतन से विस्थापित भारतीयों की करुणा और व्यथा के गहरे संकेत उनकी कविताओं में विन्यस्त हैं साथ ही उनकी कविताओं में एक ऐसी स्त्री की सतत उपस्थिति है जो अपने समय और समाज को प्रेम और करुणा में देखती है । प्रकृति इनके यहाँ मूर्त और जीवंत है । ''

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रो. नामवर सिंह ने दोनों साहित्यकारों को अपने अध्यक्षीय भाषण में अलग से विशेष बधाई दी।

विश्व के समस्त हिंदी प्रेमियों की ओर से डॉ.अभिमन्यु अनत और प्रो.पुष्पिता अवस्थी को बधाई।

भोपाल : 14.11.2009

डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र जी,
संपादक, ' विश्व हिंदी समाचार '
सम्माननीय मिश्र जी, नमस्कार ।

' विश्व हिंदी समाचार' का सितंबर 2009 अंक मिला । हिंदी के प्रचार-प्रचार में आपकी पत्रिका और विश्व हिंदी सचिवालय मॉरीशस का महत्वपूर्ण योगदान है । आप लोगों की लगन, निष्ठा और कार्यशैली की हम सराहना करते हैं और बधाई देते हैं ।

राष्ट्रीय ख्यति के अम्बिका प्रसाद दिव्य स्मृति प्रतिष्ठा पुरस्कार समिति भोपाल ने भी हिंदी के विकास, प्रचार-प्रचार और हिंदी में शतप्रतिशत कार्य करने के लिये गत वर्ष से राष्ट्रीय स्तर पर 'अम्बिका प्रसाद दिव्य हिंदी राजभाषा सम्मान' प्रारम्भ किया है । यह सम्मान दिव्य पुरस्कारों के साथ ही प्रदान किया जाता है । गत वर्ष यह सम्मान एनएचडीसी, भोपाल को दिया गया । एनएचडीसी के मुख्य कार्य कार्यपालक निदेशक श्री के. एम. सिंह ने दिव्य पुरस्कारों के संरक्षक, नागालैंड के पूर्व राज्यपाल पद्मश्री ओ. एन. श्रीवास्तव एवं संस्था के सचिव जगदीश किंजल्क के हाथों से, 20 सितम्बर 2009 को, हिंदी भवन में आयोजित एक भव्य समारोह में यह पुरस्कार ग्रहण किया था । अपनी लोकप्रिय पत्रिका के माध्यम से मैं हिंदी संस्थाओं के प्रमुखों से यह आग्रह करना चाहता हूँ कि वे अपनी संस्थाओं की उपलब्धियों की जानकारी हमारे पास भेजें ताकि वे भी इस राष्ट्रीय दिव्य सम्मान के सहभागी बन सकें ।

सानंद होंगे ।

भवदीय, जगदीश किंजल्क : संपादक, ' दिव्यालोक '

संयोजक : दिव्य पुरस्कार, 145-ए, साँईनाथ नगर, सी-सेक्टर, कोलार रोड, भोपाल-462 042 (मध्यप्रदेश)

दिमाग को चुस्त बनाती है हिंदी

भारत के वैज्ञानिकों ने कहा है कि अंग्रेजी की तुलना में हिंदी भाषा बोलने से मस्तिष्क अधिक चुस्त-दुरुस्त रहता है ।

राष्ट्रीय मस्तिष्क अनुसंधान केंद्र के डॉक्टरों ने एक अनुसंधान के बाद कहा है कि हिंदीभाषी लोगों के लिए मस्तिष्क को चुस्त-दुरुस्त रखने का सबसे बढ़िया तरीका यही है कि वे अपनी बातचीत में अधिक से अधिक हिंदी भाषा का इस्तेमाल करें और अंग्रेजी का इस्तेमाल जरूरत पड़ने पर ही करें । विज्ञान पत्रिका ' करंट साइंस' में प्रकाशित अनुसंधान के पूरे ब्यौरे में मस्तिष्क विशेषज्ञों का कहना है कि अंग्रेजी बोलते समय दिमाग का सिर्फ बायाँ हिस्सा सक्रिय रहता है, जबकि हिंदी बोलते समय मस्तिष्क का दायाँ और बायाँ, दोनों हिस्से सक्रिय हो जाते हैं जिससे दिमागी स्वास्थ्य तरोताजा रहता है ।

राष्ट्रीय मस्तिष्क अनुसंधान केंद्र की भविष्य में, अन्य भारतीय भाषाओं के प्रभाव पर भी अध्ययन करने की योजना है । अनुसंधान से जुड़ी डाक्टर नंदिनी सिंह के अनुसार मस्तिष्क पर अंग्रेजी और हिंदी भाषा के प्रभाव का असर जानने के लिए छात्रों के एक समूह को लेकर अनुसंधान किया गया । उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय मस्तिष्क अनुसंधान केंद्र द्वारा कराए गए इस अध्ययन के पहले चरण में छात्रों से अंग्रेजी में जोर से बोलने को कहा गया और फिर हिंदी में बात करने को कहा गया ।

इस समूची प्रकिया में दिमाग का एक एम.आर.आई किया जाता रहा। नंदिनी के अनुसार मस्तिष्क के परीक्षण से पता चला है कि अंग्रेजी बोलते समय छात्रों के दिमाग का सिर्फ बायाँ हिस्सा सक्रिय था, जबकि हिंदी बोलते समय दिमाग के दोनों हिस्से (बाएँ और दाएँ) सक्रिय हो उठे । अनुसंधान टीम का कहना है कि ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि अंग्रेजी एक लाइन में सीधी पढ़ी जाने वाली भाषा है, जबकि हिंदी के शब्दों में ऊपर-नीचे और बाएँ -दाएँ लगी मात्राओं के कारण दिमाग को इसे पढ़ने में अधिक कसरत करनी पड़ती है जिससे इसका दायाँ हिस्सा भी सक्रिय हो उठता है।

इन डाक्टरों की राय है कि हिंदीभाषियों को बातचीत में ज्यादातर अपनी भाषा का इस्तेमाल ही करना चाहिए और अंग्रेजी को जरूरत पड़ने पर संपर्क भाषा के रूप में । इस अनुसंधान के परिणामों पर जाने-माने मनोचिकित्सक डॉ. समीर पारेख ने कहा कि ऐसा संभव है । उनका कहना है कि हिंदी की जिस तरह की वर्णमाला है, उसके मस्तिष्क को कई फायदे हैं ।

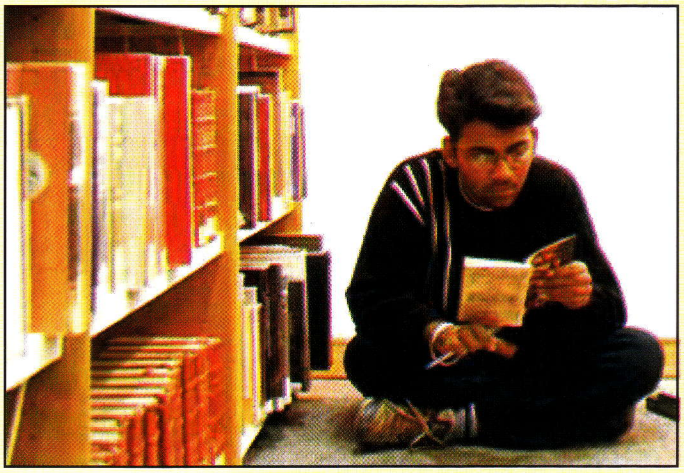

(' जागरण ' से साभार)

अगर आज हिंदी भाषा मान ली गई है तो इसलिए नहीं कि वह किसी प्रांत या देश विशेष की भाषा है, बल्कि इसलिए कि वह अपनी सरलता, व्यापकता तथा क्षमता के कारण पूरे विश्व की भाषा है।

–नेताजी सुभाषचंद्र बोस

यू.के. में भाषिक कंप्यूटिंग और मल्टी मीडिया कार्यशालाएँ

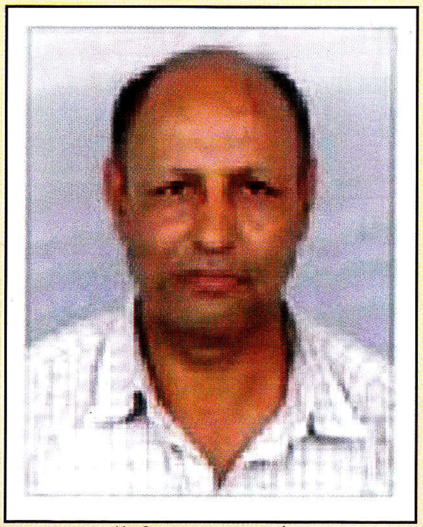

डॉ. विजय कुमार मल्होत्रा

27 सितंबर से 11 अक्तूबर, 2009 के बीच यू.के. के विभिन्न शहरों में भारत से आए रेल मंत्रालय के पूर्व निदेशक डॉ. विजय कुमार मल्होत्रा द्वारा संस्कृति यूके के महासचिव श्री अरुण त्रिवेदी और लंदन स्थित भारतीय उच्चायुक्त कार्यालय के हिंदी व संस्कृति अताशे श्री आनंद कुमार के सहयोग से हिंदी और अन्य इंडिक भाषाओं में भाषिक कंप्यूटिंग और मल्टी मीडिया हिंदी शिक्षण पर अनेक कार्यशालाओं का आयोजन किया गया । साथ ही हिंदू सोसायटी के तत्वावधान में हिंदी शिक्षकों और शिक्षार्थियों के लिए हिंदी सीखने - सिखाने के लिए मल्टी मीडिया प्रस्तुति का आयोजन भी किया गया ।

भाषिक कंप्यूटिंग कार्यशालाओं के आयोजन का प्रमुख उद्देश्य भारतीय मूल के युवा प्रतिभागियों को अपनी मातृभाषा में कंप्यूटर पर काम करने का प्रशिक्षण देना था । आम तौर पर यू.के.के युवा भारतीय अपने दैनंदिन कामों में कंप्यूटर प्रौद्योगिकी का व्यापक उपयोग करते हैं, लेकिन हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में कंप्यूटर पर काम करने में हिचकते हैं । इसका कारण यह है कि अब तक कंप्यूटर पर लैटिन से इतर लिपि में कंप्यूटर पर काम करना सचमुच दुष्कर था, लेकिन युनिकोड के आगमन से अब विश्व की किसी भी जटिल लिपि में कंप्यूटर पर काम करना उतना सहज ही है जितना कि अंग्रेज़ी में । इसके अलावा माइक्रोसॉफ्ट के एम.एस ऑफिस 2003/2007 के बाज़ार में आने के बाद तो ये भाषाएँ कंप्यूटिंग की दृष्टि से अंग्रेज़ी या अन्य विकसित भाषाओं के समकक्ष भी आ गई हैं । उदाहरण के लिए एम. एस. ऑफ़िस हिंदी 2003/2007 की सहायता से उपयोगकर्ता अपनी फ़ाइल का नाम हिंदी में लिख सकता है, वर्तनी की शुद्धता की जाँच कर सकता है और हिंदी के अकारादि क्रम के अनुसार सॉर्टिंग भी कर सकता है । इसके अलावा माइक्रोसॉफ़्ट ने इंडिक भाषाओं के लिए आई एम ई नामक उपकरण भी विकसित किया है, जिसकी सहायता से रोमन लिपि के माध्यम से इन सभी भाषाओं में सरलता से काम भी किया जा सकता है ।

इन कार्यशालाओं में विभिन्न व्यवसायों से जुड़े भारतीयों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया । अधिकांश प्रतिभागियों ने अपने लैपटॉप के साथ कार्यशाला में भाग लिया । कार्यशालाओं की इस श्रृंखला का आरंभ 27 सितंबर, 2009 लंदन के गुजराती बहुल क्षेत्र वेंबले में हुआ । इसकी अध्यक्षता लंदन स्थित भारतीय राजदूतावास के हिंदी व संस्ति अताशे श्री आनंद कुमार ने की । आशा के विपरीत इस कार्यशाला में गुजराती और हिंदी के अलावा बंगाली प्रतिभागियों ने भी भाग लिया । इस कार्यशाला के प्रतिभागियों में मुख्य रूप से चार्टर्ड अकाउंटेंट, व्यवसायी, शिक्षक, सरकारी कर्मचारी, छात्र और गृहिणियाँ थीं । बंग परिवार के सहयोग से आयोजित इस कार्यशाला की उपलब्धि यह रही कि इनमें से अधिकांश प्रतिभागी अब गुजराती, बंगला या हिंदी में ई-मेल आदि भेजने लगे हैं ।

अगली कार्यशाला 1 अक्तूबर, 2009 को फ़िंचले (लंदन) स्थित हिंदू कल्चरल सोसायटी के प्रांगण में आयोजित की गई । इस कार्यशाला में युवा और बुजुर्ग दोनों ही तरह के प्रतिभागी थे और ये सब लोग हिंदी में कंप्यूटर पर काम करने के लिए बहुत ही उत्साही थे। तीसरी कार्यशाला वेल्स की राजधानी कार्डिफ़ में इंडिया हाउस में स्थित मंदिर के प्रांगण में आयोजित की गई, जिसकी अध्यक्षता 'गोपिओ' (GOPIO) के अध्यक्ष श्री के.एन. गुप्ता ने की। इस कार्यशाला में भी अनेक डॉक्टर, पत्रकार, बुद्धिजीवी और स्वयं मंदिर के पुजारी भी शामिल हुए और कई प्रतिभागियों ने उसी दिन हिंदी कंप्यूटिंग की शुरुआत की । चौथी कार्यशाला का आयोजन 'कला संगम' की अध्यक्षा श्रीमती गीता उपाध्याय और उनके पति श्री उपाध्याय के सान्निध्य में ब्रैडफर्ड के वास्तुकला की दृष्टि से अत्यंत भव्य भवन में किया गया । इस कार्यशाला के अधिकांश प्रतिभागी तमिळभाषी थे और वे अपनी मातृभाषा में ही कंप्यूटर पर काम करने के लिए उत्सुक थे । पाँचवीं और अंतिम कार्यशाला का आयोजन हिंदी व संस्कृति अतासे श्री आनंद कुमार के सान्निध्य में लंदन स्थित भारत के राजदूतावास में 6 अक्तूबर, 2009 को किया गया, जिसमें हिंदी के अलावा पंजाबी, नेपाली और मलयालम भाषियों के अलावा हिंदी के प्रसिद्ध लेखक श्री तेजेंद्र शर्मा और हिंदी प्रेमी श्री के बी एल सक्सेना ने भी भाग लिया ।

भाषिक कंप्यूटिंग के साथ-साथ डॉ. मल्होत्रा ने 10 अक्तूबर, 2009 को 'अंकुर आर्ट्स ऐंड कल्चरल सोसायटी' की निदेशक सुश्री देविना ऋषि के अनुरोध पर उनके ही लंदन स्थित निवास पर 'हिंदी शिक्षिका संघ' के सदस्यों को हिंदी शिक्षण के लिए मल्टी मीडिया के प्रयोग की जानकारी दी । इसी विषय पर अंतिम प्रस्तुति 11 अक्तूबर, 2009 को श्री के बी एल सक्सेना और श्रीमती सीमा कुमार के अनुरोध पर लंदन स्थित हिंदू सोसायटी के हॉल में आयोजित की गई । जिसमें अभिभावकों और शिक्षकों के साथ-साथ बच्चों ने भी भाग लिया । डॉ. मल्होत्रा ने अपनी मल्टी-मीडिया प्रस्तुति के माध्यम से EDUTAINMENT की एक ऐसी अवधारणा प्रस्तुत की जिसके माध्यम से बच्चों को मनोरंजक और वैज्ञानिक ढंग से हिंदी सिखाई जा सकती है । इस प्रस्तुत में हिंदी फ़िल्मों के संवादों और गीतों का व्यापक उपयोग किया गया इस अनुष्ठान से भारतीय संस्कृति के मूल स्वर "विविधता में एकता" को मज़बूत किया जा सकता है और युवा पीढ़ी को इस आंदोलन से जोड़कर Catch Them Young के अंग्रेजी मुहावरे को भी सार्थक किया जा सकता है ।

इस दिशा में अधिक जानकारी के लिए आप डॉ. विजय कुमार मल्होत्रा से उनके 'मेल' malhotravk@gmail.com पर संपर्क कर सकते हैं । ••

श्रद्धांजलि

कागज़ अब कोरे ही रहेंगे

प्रभाष जोशी

हिंदी पत्रकारिता के प्रमुख स्तंभ प्रभाष जोशी के निधन के साथ ही हिंदी पत्रकारिता के एक युग का अवसान हो गया । उन्हें परंपरा और आधुनिकता के साथ भविष्य पर नजर रखने वाले पत्रकार के रूप में सदा याद किया जाएगा ।

उनके निधन पर वरिष्ठ आलोचक नामवर सिंह ने कहा कि अब कागद कारे पढ़ने को नहीं मिलेगा, कागद अब कोरे ही रहेंगे । ऐसा लगता है, मंगलवार आधी रात सचिन के 17 हजार रन से एक तरफ उन्हें खुशी हुई और भारत की हार का आघात लगा ... ।

वरिष्ठ कवि और समालोचक अशोक बाजपेयी ने कहा कि यह सिर्फ हिंदी पत्रकारिता का नुकसान नहीं है, बल्कि हिंदी समाज और बुद्धिजगत की भी क्षति है । हिंदी में उनके जैसे सर्वमान्य बुद्धिजीवी काफी कम है, जिन्हें सभी ध्यान से पढ़ते हों । उन्होंने कहा कि प्रभाष जी ने अनोखी लेखनी विकसित की और पत्रकारिता के माध्यम से हिंदी को बेहतरीन गद्य दिए। कहां क्रिकेट और कहां कुमार गंधर्व, कहां राजनीति और कहां हिंद स्वराज, इन सभी विपरीत ध्रुवों को एक साथ साधना हर किसी के बस में नहीं है ।

मृत्यु की खबर पाकर प्रभाष जी के आवास पर पहुंचने वालों में भाजपा के लाल कृष्ण आडवाणी, राजनाथ सिंह और कलराज मिश्र, पूर्व सांसद संतोष भारती व एम जे अकबर, हंस के संपादक राजेंद्र यादव, एनडीटीवी के पंकज पचौरी, सीएनएन आईबीएन के राजदीप सरदेसाई समाजसेवी सुनीता नारायण प्रमुख थे ।

ज्ञानपीठ के निदेशक रवींद्र कालिया ने समूचे ज्ञानपीठ परिवार की ओर से गहरी संवेदना प्रकट करते हुए कहा कि प्रभाष जी हिंदी पत्रकारिता का उज्वल नाम थे और दिल्ली के सांस्कृतिक जीवन में उनकी उपस्थिति बेहद अहम थी । हिंदी अकादमी के अध्यक्ष अशोक चक्रधर ने व्यक्तिगत क्षति बताते हुए कहा कि युग का अंत मुहावरा होता है, लेकिन प्रभाष जी के निधन के साथ ही परंपरा और आधुनिकता के साथ भविष्य दृष्टि रखनेवाली बेलाग और निर्भीक पत्रकारिता के एक युग का सचमुच अवसान हो गया । हंस के संपादक राजेंद्र यादव ने कहा कि मैं उन्हें हिंदी का तीसरा सबसे बड़ा पत्रकार (अज्ञेय और राजेंद्र माथुर के बाद मानता हूँ), जिन्होंने भाषा, प्रतिमानों और छवि को बदलने में अहम योगदान दिया । वरिष्ठ लेखक और स्तंभ लेखक महीप सिंह ने कहा कि जोशी जी ने हिंदी पत्रकारिता को राष्ट्रीय स्तर तक उठाया और इसे गंभीर स्वरूप प्रदान करने में उनकी भूमिका अहम रही । उन्होंने कहा कि आपरेशन ब्ल्यू स्टार के दौरान उन्होंने बेखौफ होकर वे सारे विचार प्रकाशित किए, जो माहौल के विपरीत थे । दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी के विभागाध्यक्ष सुधीश पचौरी ने कहा कि प्रभाष जी का निधन हिंदी पत्रकारिता के लिए अपूरणीय क्षति है । उनके होने से ऐसा लगता था कि अगर कोई परेशानी आएगी तो एक छाता हमारे ऊपर आकर तन जाएगा, लेकिन अब आभास छिन गया ।

मुनीश्वरलाल चिंतामणि नहीं रहे

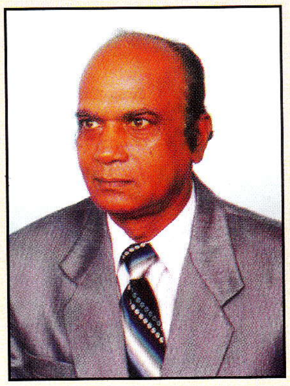

मुनीश्वरलाल चिंतामणि

मॉरीशस हिंदी साहित्य के निर्माण में डॉ. मुनीश्वरलाल चिंतामणि की बड़ी प्रतिबद्धता रही है । बुधवार 18 नवंबर, 2009 को प्रात: मॉरीशस ब्रॉडकास्टिंग कारपोरेशन ने डॉ. मुनीश्वरलाल चिंतामणि की मृत्यु का हृदय विदारक समाचार प्रसारित किया । देह नश्वर है, मृत्यु किसी का लिहाज नहीं करती। हाँ, मॉरीशस के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. मुनीश्वरलाल चिंतामणि जी अब नहीं रहे । हृदय गति रुक जाने से उन्हें अपना नश्वर शरीर त्यागना पड़ा । उनका न रहना दु:ख की सीमा में बाँधा नहीं जा सकता, उसे व्यक्त करने के लिए शब्द भी नहीं मिल रहे हैं ।

डॉ. मुनीश्वरलाल चिंतामणि जी का जन्म 18 फरवरी, 1935 ई. को त्रिओले ग्राम, मॉरीशस में हुआ । आपने काशी विश्वविद्यालय से बी.ए., बी.एड, दिल्ली विश्वविद्यालय से एम.ए. तथा विक्रम विश्वविद्यालय से पीएच. डी. की परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं । आपने विषद रूप से हिंदी-सेवा की है । आप मॉरीशस हिंदी लेखक संघ के संस्थापक एवं मान्य प्रधान, हिंदी साहित्य अकादमी के मान्य प्रधान भी रहे तथा हिंदी संगठन के अध्यक्ष भी रहे ।

आप शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में हिंदी के अध्यापक थे । आप महात्मा गांधी संस्थान में भूतपूर्व वरिष्ठ व्याख्याता एवं भाषा विभागाध्यक्ष भी रहे। इस पद से वे 1995 में सेवा निवृत हुए ।

आपने दर्जनों पुस्तकों द्वारा हिंदी साहित्य का संवर्धन किया है । आपकी अधिकतर कृतियाँ मौलिक काव्य के रूप में हैं । इसके अतिरिक्त आपने कहानियाँ, लघुकथाएँ, साहित्यिक निबंध, लेख, बाल-साहित्य आदि लिखे हैं । सचमुच आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे ।

सन् 2000 में हिंदी साहित्य अकादमी, मॉरीशस ने आपको ' कवि-श्री ' की उपाधि से अलंकृत किया था । डॉ. मुनीश्वरलाल चिंतामणि जी न केवल एक अच्छे इंसान थे, बल्कि वे पुरानी पीढ़ी के साहित्यकारों में एक अति सज्जन एवं सर्वप्रिय व्यक्ति थे । वे सही मायने में हिंदी साहित्य के प्रेरणा-स्त्रोत थे । उनकी इस सदाशयता के किए पूरा हिंदी जगत ऋणी रहेगा ।

प्रस्तुति : डॉ. हेमराज सुन्दर, संपादक 'वसंत ' एवं 'रिमझिम ', महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस ।

प्रभाष जोशी एवं मुनीश्वरलाल चिंतामणि के असामयिक निधन पर
विश्व हिंदी सचिवालय
अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है ।

जमैका के हिंदी छात्र पिकनिक पर

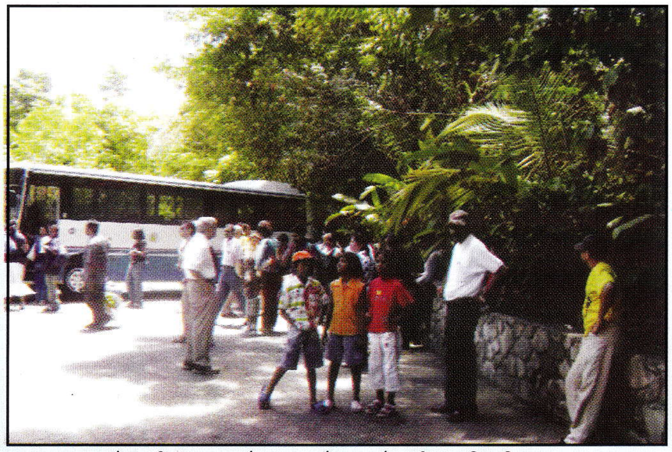

जमैका हिंदी क्लब के छात्र और उनके परिवार पिकनिक पर

जमैका में जो हिंदी पढ़ने आते हैं वे अधिकतर अफ्रो-जमैकन मूल के होते हैं । उनकी कोई हिंदी की पृष्ठभूमि नहीं होती है --- उनके लिए हिंदी बिल्कुल विदेशी भाषा होती है । संसार में हिंदी भाषा के बढ़ते महत्व, हिंदी फिल्मों और उनके नाच-गानों की लोकप्रियता तथा भारतीय संस्कृति से आकर्षित हो ये हिंदी सीखने आते हैं । ये छात्र हिंदी पढ़ना और लिखना तो सीख लेते हैं किंतु हिंदी में बातचीत करने के लिए इन्हें न तो घर में और न ही बाहर कोई मिलता है । हिंदी भाषा के प्रयोग और अभ्यास के बिना हिंदी भूलने लगते हैं । हमने इस समस्या के समाधान के लिए हमारे यहाँ हिंदी पढ़नेवाले छात्र-छात्राओं का एक परिवार बनाने की योजना बनाई और इसे कार्यान्वित करने के लिए जनवरी, 2004 में ' हिंदी क्लब ऑफ जमैका ' की स्थापना की। ' हिंदी में बातचीत कीजिए ' पुस्तक लिखी ।

हम हिंदी क्लब में छात्रों के बीच आपसी मेलजोल-भाईचारे (फेलोशिप) और हिंदी में बातचीत करने को प्रोत्साहन देते हैं । हिंदी मूवीज में इनकी रुचि होने के कारण उनके वार्तालाप और गानों के मायने बताते हैं । मायने समझने पर मूवीज देखने का वे पूरा मज़ाले पाते हैं। हिंदी मूवीज देखकर वे खुद उनके नाच-गाने सीखने की कोशिश करते हैं । समय-समय पर हम उन्हें पिकनिक पर ले जाते हैं । पिकनिक में हिंदी छात्रों को ही नहीं, उनके माता-पिता, भाई-बहन आदि को और भारतीय उच्चायोग के स्टाफ और उनके परिवार को भी आमंत्रित करते हैं ताकि छात्रों में एक बड़े हिंदी परिवार की अनुभूति हो और बातचीत करने में जो झिझक होती है वह दूर हो ।

हिंदी क्लब की स्थापना के बाद हम कई बार पिकनिक पर गए हैं जिससे पारिवारिक हिंदी वातावरण बनाने में बड़ी सफलता मिली है । विगत 22 अगस्त 2006 को हम पिकनिक पर गए थे जो अब तक की सबसे बड़ी हिंदी की पिकनिक पार्टी रही । हिंदी क्लब परिवार (छात्रगण और उनके संबंधी) के 29 और भारतीय उच्चायोग परिवार के 21, कुल 50 लोगों की बड़ी पार्टी जमैका के सेंट ऐन प्रदेश के ' कोयाबा बाग एवं महो जलप्रपात coyaba gardens & Mahoe falls ' का आनंद लेने और हिंदी को बढ़ावा देने पिकनिक पर गई थी । किंग्सटन से कोयाबा बाग की बस-यात्रा 2 घंटे की थी । हमने 2 बसें किराए पर ली थीं । प्रस्थान-स्थल भारतीय उच्चायोग के प्रांगण से हम सुबह 5 बजे निकले और शाम 7 बजे लौटे ।

हर व्यक्ति ने पिकनिक को सफल बनाने में अपना पूरा योगदान दिया। बस यात्रा में सबों ने डीवीडी (DVD) पर हिंदी मूवीज और गानों का आनंद लिया, हँसी-मज़ाक चलता रहा । यात्रा के बीच में हम एक जगह नमकीन के साथ गर्म चाय या ठंडा पेय लेने रुके थे । कोयाबा 11.15 बजे पहुँचे । स्वल्पाहार लेकर सबों ने बाग की सुंदरता और जलप्रपात के शीतल जल में स्नान का आनंद लिया । पूर्वाह्न 11.30 बजे से अपराह्न 2.00 तक लंच में अति स्वादिष्ट शाकाहारी खाना खाकर लोग अँगुलियाँ चाटते रहे । भात-दाल, पुलाव, दालपुरी, कई तरह की भाजियाँ, दही, फुलौरी, पकौड़े, गुलाब जामुन, केक आदि इतना सब था कि सभी तृप्त हो गए । माँसाहारी अफ्रो-जमैकन छात्र तो पिकनिक के बाद भी कई दिनों तक उस खाने का बखान करते रहे । लंच के बाद हिंदी चुटकुलों ने लोगों को खूब हँसाया । फिर खेलों का कार्यक्रम रहा। क्रिकेट, वॉलीबाल, डोमिनो, नीबू दौड़, रूमाल दौड़ आदि खेलों में भाग लेनवालों का जोश देखने लायक था । नृत्य और गीत का कार्यक्रम भी था, किंतु वर्षा ने खलल डाल दी । जब वर्षा रुकी, तब शाम होने लगी थी । अत: हम लौट आए ।

हिंदी प्रेमियों के बीच खड़े हैं डॉ. सीताराम पोद्दार

अफ्रो-जमैकन, इंडो-जमैकन और इंडियन-इंडियन की फेलोशिप के बीच छात्रों में हिंदी में बातचीत की कोशिश ' आप कैसे हैं, पकौड़े लीजिए, अरे गुलाब जामुन तो बहुत बढ़िया बने हैं और लीजिए न ...... आदि-आदि ' ने हमें मुग्ध कर दिया । भारतीय उच्चायोग के स्टाफ और उनके पविार का अपनापन और सहयोग अति सराहनीय रहा । भारतीय उच्चायुक्त तो पिकनिक में शामिल नहीं हो सकते थे क्योंकि उस समय वे भारतवर्ष गए थे किंतु प्रथम सचिव, श्री के. राजागोपालाचारी और उनकी पत्नी ने शामिल होकर चार चाँद लगा दिए ।

प्रस्तुति : डॉ. सीताराम पोद्दार, 5 गेरबरा ड्राइव, मोना हाइट्स, किंग्सटन - 6, जमैका, वेस्ट इंडीज ••